# महावीर जयन्ति स्मारिका - २००७ (फोल्डर नं. ०१४०२५)


मुख्य टाइटल

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – भगवान महावीर-जीवन व दर्शन

चउवीस तित्थयर भक्ति ---------- १

मङ्गलाष्टक ---------- २

आज जन्म दिन सन्मति प्रभु का ---------- ३

जब बालक से विभु बने ---------- ४-५

तीर्थंकर महावीर ---------- ६-८

महावीर का श्रावक ---------- ९-११

महावीर का वीतराग दर्शन ---------- १२-१५

वर्तमान में भगवान महावीर के तत्त्व-चिंतन की सार्थकता ---------- १६-१८

केवलज्ञानी भगवान महावीर ---------- १९-२०

भगवान महावीर के सिद्धान्त-आज परिवेश में ---------- २१-२२

भगवान महावीर प्रभु का तीसरा भव मरीचि के रूप में ---------- २३-२४

भगवान महावीर और उनका जीवन दर्शन ---------- २५-२६

भगवान महावीर के विचार-विश्वशान्ति के व्यवहार ---------- २७-३०

भगवान महावीर का जीवन घटना प्रदान क्यों नहीं ---------- ३१-३४

भगवान महावीर की साधना ---------- ३५-३६

विश्व शान्ति के प्रेरक भगवान महावीर ---------- ३७

भगवान महावीर का सर्वोदय तीर्थ और श्रावकाचरण ---------- ३८-३९

महावीर नमन ---------- ४०

द्वितीय खण्ड – अध्यात्म और सिद्धान्त

मोक्ष पदार्थ ---------- १-३

अध्यात्म व अहिंसा ---------- ४-६

अध्यात्म और सिद्धान्त ---------- ७-१४

द्रव्य के साधाराण गुण ---------- १५-१६

निश्चय-व्यवहार ---------- १७-२२

अन्तरात्मा की अन्तर्मुखता और उसका उद्भव ---------- २३-२५

लघुतत्त्वस्फोट के परिप्रेक्ष्य में आचार्य अमृतचन्द्रसूरि के कृतित्व का वैशिष्ट्य ---------- २६-३४

आचार्य अमृतचन्द्र एवं उनका लघुतत्त्वस्फोट ---------- ३५-३९

देखनेवाले को देखने का उपाय ---------- ४०-४५

जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त ---------- ४६-५०

तत्त्वबोध ---------- ५०



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्म सिद्धान्त एवं समाज न्याय व्यवस्था------------------------------------------------५१-५५
निज आत्मा ही परम ध्येय -------------------------------------------------------------५६-५८
जैन दर्शन में लोक की संरचना ------------------------------------------------------ ५९-६१
मोक्षमार्ग की द्विविधता---------------------------------------------------------------- ६२-६३
जैन दर्शन का पुनरावलोकन----------------------------------------------------------६४-७०
जैन दर्शन में कर्मबंध प्रक्रिया -------------------------------------------------------७१-७२
तृतीय खण्ड – भक्ति और साहित्य-साधना
भक्ति में मुक्ति का अंकुर --------------------------------------------------------------१-५
साधु समाधि और सुधा साधन एवं आचार्य स्तुति-------------------------------------------६-८
भक्ति का फल ------------------------------------------------------------------------ ९-१०
जिनेन्द्र दर्शन ------------------------------------------------------------------------ ११-१४
बीसवीं सदी के शलाका महापुरुष आ. श्री शान्तिसागरजी महाराज और दिगम्बरत्व ---------१५-१९
आचार्य श्री शान्तिसागरजी का चरम मांगलिक प्रवचन ------------------------------------ २०-२३
क्षुल्लक श्री जिनेन्द्र वर्णी एक सिमटा-सा विराट व्यक्तित्व---------------------------------२४-२६
अपने भीतर झाँको---------------------------------------------------------------------२६
राजस्थानी जैन सन्तों की साहित्य साधना -------------------------------------------- २७-३५
मानवीय मूल्यों के सजग पहरी जैनपुराण ----------------------------------------------- ३६-३९
जैन एवं जैनेतर साहित्य में सीता निर्वासन -------------------------------------------४०-४८
आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का सारस्वत योगदान -----------------------------------------४९-५१
समाधिमरण-संथारा अहिंसा है न कि...-------------------------------------------------- ५२-५७
स्वधर्म रक्षा का प्रयत्न-सल्लेखना --------------------------------------------------------५८-६५
समाधिमरण-तुलना एवं समीक्षा ---------------------------------------------------------६६-७२
चतुर्थ खण्ड – संस्कृति और इतिहास
जिन छत्र------------------------------------------------------------------------------ १-२
प्राचीन भारत के वैश्विक गणतंत्र-प्राणीतंत्र-----------------------------------------------३-६
जैन समाज-जागो------------------------------------------------------------------------७-१०
जैन संस्कृति वेदपूर्व है----------------------------------------------------------------- ११-१३
बाहुबली प्रतिमा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -------------------------------------------------- १४-१७
वीर-प्रार्थना ------------------------------------------------------------------------------१७
वैशाली में अनुभूत करें महावीर दर्शन ----------------------------------------------------- १८-२२
महावीरमय-अहिंसामय हो जाना -------------------------------------------------------------२२
ऐतिहासिक अतिशय क्षेत्र गोघा--------------------------------------------------------------२३-२४
जैन संस्कृति संरक्षण एवं संवर्द्धन ------------------------------------------------------- २५-२७
जयपुर के जैन दीवान ----------------------------------------------------------------------२८-३४
जैनधर्म का प्राचीनतम अभिलेखीय प्रमाण ----------------------------------------------------३५-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसक शाकाहार-स्वास्थ्य का आधार---------------------------------------------------३७-३९
मौन चिन्तन-चित्त की एकाग्रता ---------------------------------------------------------- ४०-४१
मुनि परम्परा के निर्वाहक-आचार्य श्री भरतसागरजी ---------------------------------------------४२
सीख-संकलन ---------------------------------------------------------------------------------४३
बदलती जीवन शैली-अहिंसा एक मात्र विकल्प ------------------------------------------- ४४-४५
दिगम्बरत्व का महत्त्व -------------------------------------------------------------------४६-४८
महावीर गीत ----------------------------------------------------------------------------------४८
आचार्य कुन्दकुन्द और उनके उपदेश ---------------------------------------------------४९-५०
न्यायाचार्य पं. माणिकचन्दजी कौन्देय---------------------------------------------------५१-५२
ज्ञान बिना तप कैसा------------------------------------------------------------------------- ५२
श्री दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा ------------------------------------------ ५३-५४
मालवाधिकार एवं जैन दर्शन -------------------------------------------------------------- ५५-५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org